the same conditions not only with those people who are living with the Hindu brothers and sisters, but they are our Indian nationals. Why do you discriminate? Why should the Government discriminate? Discrimination from the Government for the purpose of giving benefits should not be there. Sir, their social condition has not improved, their economic condition has not improved, their educational standard has not improved. Not only that, simply because they embrace Christianity, you cannot discriminate those people from enjoying the benefits which they were enjoying earlier. Another thing which the hon. Member, Shri Kiruttinan, has said is that you are giving those benefits to converts from other communities. Some of the State Governments have given them the benefits. The Central Government is also watching them. When a question of decision on the part of the Central Government comes up, why should they delay. Financial implications are not much. You are to bring in an amendment order including those people who are entitled to these benefits. On the one side in the Constitutional provision you say that you can embrace any religion, on the other hand you are depriving them of their rights. Incidently I would like to submit to the hon. Minister the Mandal Commission's recommendations were very clear. While discussing the backward classes the Mandal Commission went into the question of converted Christians also. They have said in a very categorical terms and I would like to quote only one sentence from an hon. Justice. The hon. Minister will appreciate this. Eight judges have accepted the Mandal Commission's recommendations. There is an observation by one of the Judges at page 8 of the Report which I quote :

> "To deny the Scheduled Castes the Constitutional protection of reservation solely by reason of change of faith or religion is to endanger the very concept of secularism and the *raison dere* of reservation."

He said it will endanger the very concept of secularism. You are alienating those people. You are not recognising them. You are not giving them the due status which they are entitled to. By doing this those people will feel frustrated. Not only that, those people, as I said, are in the villages. They are working for the welfare of the people, they are doing social service, they are very much in the national mainstream. Sir, how many lakhs are these neo-Buddhists. I have no quarrel with the neo-Buddhists who have got the benefit. I welcome it. They are not even 20 or 25 lakhs. But these people are more than one crore. And those people have been making appeals to the Government.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): One crore is an ideal figure.

5.00 P. M.

SHRI V. NARAYANASAMY : Their voice is also not heard. My complaint is that Ministers go to the meetings and give assurances to the people and then they forget about it.

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI) : Mr. Narayanasamy, now it is 5 o'clock. The Private Members' Legislative Business time is over. You can continue your speech when your Bill is taken up.

---

## SPECIAL MENTIONS

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI): We will now take up special mentions.

**चौधरी हरि सिंह** (उत्तर प्रदेश) : आज खत्म कर दीजिए. पांच बज गये हैं आज फाइडे है. लास्ट डे आफ द वीक । इस बिजनैस को किसी दूसरे वर्किंग डे पर ले लीजिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI) : I have to inform the hon. Members that the Business Advisory Committee has taken a decision that we will sit up to 6 o'clock and beyond 6 o'clock if the Members agree and if there is a compelling business of the Government.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR (Uttar Pradesh) : If there is proper quorum.

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI) : Mathurji, you know better than me. So let us sit up to 6 o'clock and finish special mentions. After 6 o'clock we will decide whether to sit or not.

Maulana Obaidullah Khan Azmi, absent. Shri Rajan Chellappa, not present. Shrimati Jayanthi Natarajan, not present.

**Need to Instal a Bronze Statue of Emperor Ashoka in the Ashoka hall of the Rashtrapati Bhavan.**

**श्री बहमदेव आनन्द पासवान** (बिहार) : उपसभाध्यक्ष

जी, आपने जो मुझे समय दिया मैं इसके लिए आपका शुक्रगुजार हूं । आज मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के माध्यम से इस सदन का ध्यान उन महत्वपूर्ण पहलुओं की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं जो विगत 43 वर्षों से अछूता रहा है । मैं यह कहना चाहता हूं :

"मुद्दत के बाद मुद्दते हयात आज आयी है,
बयां कर दो सही सही जो राज लाई है ।"

आज मैं ऐसी चीज के विषय पर कहने जा रहा हूं जो चीज इस संसद में राज्य सभा के हाल में सभी पार्लियामेंट के मेम्बरों के सामने लगी हुई है, यहां के गुम्बद पर भी लगी हुई है उसी की चर्चा कर रहा हूं । यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक बहुत बड़ा घपला है । इसको बोफोर्स कहा जाए या ऐतिहासिक बोफोर्ज कहा जाए या ऐतिहासिक हर्षद मेहता प्रतिभूति घपला कहा जाए तो इसे औचित्य ही समझा जायेगा ।

वर्तमान पाटलीपुत्र या पटना जिसे मगध साम्राज्य की राजधानी बनाने का गौरव भी प्राप्त था और जिनकी बदौलत 1000 वर्षों तक बिहार संसार की सांस्कृतिक प्रेरणाओं का केन्द्र रहा था । वह था महान प्रियदर्शी सम्राट अशोक । उसी महान अशोक के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा ।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत गणराज्य स्थापना दिवस 26 जनवरी, 1950 को भारत सरकार ने अपने राष्ट्रीय चिह्न के रूप में जिस "सिंह शीर्ष" को अपनाया है यह अशोक द्वारा निर्मित सारनाथ का "अशोक स्तम्भ" है ।

हमारे राष्ट्रध्वज तिरंगा के मध्यम में जो चक्र है वह भी अशोक चक्र ही है जिसे "धम्म चक्र" कहते है ।

भारत को जगतगुरु कहलाने में सम्राट अशोक का योगदान अविस्मरणीय है जिसने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने पुत्र एवं पुत्री को सुदूर देशों में भेजा । परिणाम सामने है कि आज सवा दो हजार वर्षों के बाद भी विभिन्न देशों के बौद्ध धर्मावलम्बी बिहार दर्शन के लिए भारत आते है ।

प्रसिद्ध इतिहासकार एच जी वेल्स ने अपनी पुस्तक में कहा है कि अशोक जैसा सम्राट किसी किसी युग और किसी किसी देश में महान सौभाग्य से जन्म लेता है । इनकी गणना विश्व के महान एवं अद्वितीय सम्राटों में की जाती है ।

जापान, चीन, तिब्बत और थाईलैण्ड में भी अशोक की महानता एवं परम्पराओं को समुचित सम्मान दिया जाता है ।

अशोक को आज भी उतने लोग स्मरण करते हैं जितने लोगों ने कभी भी कॉन्स्टेनटाइन या चार्लामेन को याद नहीं किया था । उसी महान अशोक की मूर्ति या चित्र भारत के किसी ऐतिहासिक स्थान अथवा सार्वजनिक स्थल पर नहीं लगाया जाना विश्व में उनके चाहने वालों की आकांक्षाओं पर बहुत बड़ा कुठाराघात है । यह आश्चर्य का विषय है कि ऐसे महान व्यक्तित्व की आकृति से वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ी को अपरिचित रखा गया है । भारत जैसे सम्प्रभुता सम्पन्न गणराज्य में जहां एकता एवं समानता की नीति अपनाई गई है यह भेदभाव कैसा ? बी०डी०ओ०, सी०ओ०, एस०डी०ओ०, कलेक्टर, मिनिस्टर, राज्यपाल, सांसद, राष्ट्रपति सभी अशोक स्तम्भ की मुहर लगाते हैं । इतिहास बताता है कि सम्राट अशोक मगध साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र था । चन्द्रगुप्त का जन्म घनानन्द की मुरा नाम की पत्नी जो कमेरे वर्ग की मेहनतकश समाज की विरांगना थी, उसी से हुआ था । अतएव पौराणिक एवं ऐतिहासिक अनुश्रुतियों के अनुसार सम्राट अशोक का वंशज शोषित समाज का था । सम्भवत: हमारे शासक वर्ग ने अब तक उस शोषित समाज के सम्राट अशोक के कृतित्व को तो अपनाया किन्तु उनकी आकृति जिससे उनकी पहचान बनती जानबूझ कर इरादे के साथ, मुन्नज्जिम तरीके से आने वाली पीढ़ीयों से छिपाने का षड़यंत्र किया है । इतिहास कहता है कि चरवाहा बालकों के बीच एक विलक्षणकारी चन्द्रगुप्त चरवाहा ने अपनी योग्यता, क्षमता एवं साधना के बल पर मगध साम्राज्य का सम्राट बना था, उसी का पौत्र बिन्दुसार का बेटा सम्राट अशोक भी अपनी तीक्ष्ण एवं पैनी दृष्टि से देश और समाज की सेवा करके अपने देश की संस्कृति को संवारा एवं सजाया है, तब प्रसिद्ध हुआ है । जैसा कि आप जानते है कि इतिहास अपने आप को दुहराता है । ठीक उसी तरह वर्तमान में क्षेत्रीय गौतम बुद्ध के रूप में क्षेत्रीय पू० पू० प्रधानमंत्री श्री वी० पी० सिंह और उनका राज पाट चरवाहा सम्राट चन्द्रगुप्त के पौत्र सम्राट अशोक के स्थान पर लालू प्रसाद है जो आज चरवाहा विद्यालय खोलकर शोषितों एवं कमेरे समाज को आगे लाकर सामाजिक न्याय का फिर वही "धम्मचक्र" चला रहा है ।

उपसभाध्यक्ष जी, आपके माध्यम से मेरा भारत सरकार से विनम्रतापूर्वक निवेदन है कि भारत के महान सपूत सम्राटों के इतिहास में अद्वितीय महान प्रियदर्शी सम्राट अशोक की प्रतिमा राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में स्थापित की जाय ।

**श्री एस० एस० अहलुवालिया** (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, श्री पासवान जी ने जो मांग की है, मैं उसका समर्थन करता हूं । मेरे ख्याल में यह मुद्दा बहुत बार उठ चुका है और बहुत बार इस पर चर्चा भी हुई है । परन्तु आज तक सम्राट अशोक का कोई चित्र उपलब्ध नहीं है । किसी इतिहासकार ने लिखा है कि अशोक बहुत कुरूप था, इसलिए उसने अपना चित्र कभी नहीं बनवाया । किसी दूसरे इतिहासकार ने लिखा है कि सम्राट अशोक उसी तरह रहता था जिस तरह से हिटलर रहता था । जिस तरह से हिटलर कई रूपों में घूमता था उसी तरह अशोक की भी स्थिति थी ताकि उसे कोई पहचान न सके । ऐसा कहा जाता है कि सम्राट अशोक के जीवन को कुछ भय था । इसलिए उसने अपना चित्र सेक्यूरिटी रीजन से नहीं बनवाया । कौन सी बात सच है, यह बात पुरातत्व विभाग से पता लगाया जा सकता है कि वाकई में सम्राट अशोक का कोई चित्र है । जब हम अशोक

स्तम्भ लगाते हैं तो अशोक का कोई स्टेट्यू भी लगाना जरूरी है ।

**श्री संघ प्रिय गौतम** (उत्तर प्रदेश) : मैं भी पासवान जी द्वारा उठाये गये मुद्दे से अपने आप को सम्बद्ध करता हूं और एक बात कहना चाहता हूं कि हमारे बहुत से महापुरुषों के काल्पनिक चित्र हैं । उनकी पूजा अर्चना की जाती है । वे महत्वपूर्ण स्थानों पर लगे हुए हैं । वे काल्पनिक चित्र हैं मगर वास्तविक मालूम होते हैं ....**(व्यवधान)** । राम की ही बात नहीं है अनेकों ऐसे पुरुष है जिनकी कोई तस्वीर नहीं है । लेकिन पुरातत्व विभाग में किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं अशोक का चित्र अवश्य मिल जाएगा ।

**श्री बहमदेव आनन्द पासवान** : उनका चित्र है .....**(व्यवधान)** ।

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI) : No. I am not permitting it. Don't do that. I am not permitting you, Mr. Paswan. *(Interruption).*

आप हाउस की गरिमा को बनाये रखें । आपको मैंने इंटरप्ट नहीं किया । हाउस की कुछ व्यवस्था है, गरिमा है । आप उस गरिमा का ख्याल रखें ।

Now, Shri Balbir Singh. Not present. Shri Suresh Pachouri. Not present. Shri G. Venkatraman. Not present.

Shri Bhadreswar Gohain, not present. Shri ish Dutt Yadav, not present here. Shri B. K. Hariprasad, not present here. Shri Shankar Dayal Singh, not present here. Shri Krishan Lal Sharma, not present here. Shri S. Muthu Mani.

**Discrimination in Telecasting Tamil Feature Films and Tamil Song Sequences in Chitramala by Doordarshan**

SHRI S. MUTHU MANI (Tamil Nadu) : Mr. Vice-Chairman, thank you for giving me this opportunity. I wish to draw the attention of the Central Government through this august House towards yet another instance of highhandedness on the part of Doordarshan.

Every Sunday afternoon a regional language movie is telecast by Doordarshan. The turn of each language is supposed to be on alphabetical order. But we have to check up with the Doordarshan authorities whether they have a different set of alphabets because this policy is followed more in the breach. In the process, most often, Tamil movie is the victim since its telecast is delayed unduly. At times, the turn of Tamil movie comes after three or four months owing to this manipulation.

After all this struggle, when Tamil gets a chance, a movie unknown to the Tamils is telecast, thus forcing the eager Tamils to shut their T.V. sets. After three to four months' long wait either a too old film that had flopped miserably or some hotch-potch low-budget movie produced specifically for Doordarshan is telecast as Tamil feature film. Ucchi Veiyil, Veedu, Palani and Panangadu are only few of such movies telecast by Doordarshan. This sunday the Tamil feature film was seen in Tamil Nadu also, and there was a lot of criticism for telecasting a movie known as 'Panangadu' on 8th August 1993. No one ever had heard about such a movie in Tamil. For the sake of saving some money, Doordarshan is telecasting such hopeless movies.

When it comes to other languages, the latest hit movies are shown. It shows there is some discrimination at the level of decision-making or selection of films.

Again, Delhi Doordarshan presents 'Chitramala', a mixture of dance sequences from various languages every Tuesday. Tamil speaking people, particularly outside Tamil Nadu, wait before their T.V. sets with a great expectation to see a dance sequence in their language. Many Thursdays would pass, but a Tamil song would not be telecast. They would be blessed with one, only once in a few months. I fail to understand the reason for this. I would like to ask whether there are certain norms regarding such telecasts and whether there are officials to monitor as to what is happening to each programme on Doordarshan.

I appeal to the Central Government to caution the officials responsible for the selection of regional films and dance sequence for 'Chitramala' to give Tamil language its due. Latest hit Tamil films and songs should be presented on T.V. and the frequency of Tamil movies should be increased on par with other languages.

Even when our hon. Chief Minister followed the Gandhian way by going on fast for four days for our due share of Cauvery water, Doordarshan blacked out the news. It is condemnable.

It is a matter of great concern in a federal setup that the interests of Tamil Nadu are often neglected by Doordarshan. Even the 7.30 p.m. news-bulletin from Madras Kendra on 9-8-93 deleberately refrained from mentioning the sanction of Rs. 1 lakh each to the families of the bomb blast victims in Madras by our hon. Chief Minister. The Central Government would do well to instruct Doordarshan to mend its ways.